अगस्त : 2020

RNI No. CHHHIN/2011/44763

ISSN 2278-392X

छत्तीसगढ़-मित्र

साहित्य और समालोचना का मासिक

■ केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार के चयनित ग्रंथालयों के लिए स्वीकृत पत्रिका

मूल्य : 40 रू.

Scanned with CamScanner

RNI - CHHHIN/2011/44763

ISSN 2278-392X

छत्तीसगढ़-मित्र

साहित्य और समालोचना का मासिक
पं. माधवराव सप्रे द्वारा स्थापित-प्रकाशित

स्थापना वर्ष
जनवरी -1900

वर्ष : 11 अंक : 8
अगस्त : 2020

❁ ❁ ❁

संपादक
डॉ. सुशील त्रिवेदी

❁ ❁ ❁

प्रबंध संपादक
डॉ. सुधीर शर्मा

❁ ❁ ❁

संपादन-परामर्श
भारत यायावर
परितोष चक्रवर्ती
रमेश नैयर
डॉ. अशोक सप्रे
नन्दकिशोर तिवारी
डॉ. चित्तरंजन कर
गिरीश पंकज

❁ ❁ ❁

अक्षर-संयोजन
प्रभात सोनी

❁ ❁ ❁

आवरण चित्र - शिवाली ढाका

❁ ❁ ❁

सहयोग राशि

मूल्य : 40 रु. : इस अंक का
300 रु. : वार्षिक
1000 रु. : पाँच वर्ष
5000 रु. : आजीवन

इस अंक में....

आलेख-संस्मरण

1. लॉक डाउन, पलायन और स्त्री-संघर्ष - प्रो. चन्द्रदेव यादव 3
2. कश्मीर और मैं - सूरज पालीवाल 16
3. मिथकों में कवि विष्णु खरे की आवाजाही - व्योमेश शुक्ल 18
4. जीवन का प्राकृत स्वरूप ही उत्सव है - अनिल त्रिवेदी 21
5. बस्तर का लोक चित्र - खेम वैष्णव 23

सामयिक

6. तरल भाव संवेदना के अदभुत शिल्पकार-गीतकार नरेंद्र श्रीवास्तव - सतीश कुमार सिंह 26
7. राष्ट्रपति कलाम के साथ एक यात्रा - सरला माहेश्वरी 29
8. यह कैसा सावन है, जिसमें हर नयन जलाशय लगता है - हरि ठाकुर - देवधर महंत 33
9. राम मनुज कस रे सठ बंगा - अमन कुमार 35

कहानी

10. अयोध्या का छिपा खजाना - मैक्सिम देमचेन्को 40

समीक्षा

11. फिल्म शकुंलता देवी के मार्फ़त - पुंज-प्रकाश 45
12. देह ही देश - प्रज्ञा शाकल्य 48

लघुकथा-कविताएं

13. निमिषा सिंघल की कविता 15
14. डॉ.माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग' के नवगीत 17
15. सोनी पाण्डेय की कविता 22
16. यतिश कुमार की कविता 44
17. डॉ. अनुराधा चंदेल 'ओस' की कविताएँ 25

छत्तीसगढ़-मित्र में प्रकाशित रचनाओं के लिए, संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है। लेखकों द्वारा उनकी रचनाओं में प्रस्तुत विचार व दृष्टिकोण उनके अपने हैं, छत्तीसगढ़-मित्र परिवार के नहीं। समस्त मामले रायपुर न्यायालय में ही विचाराधीन।

● संपादकीय पता : **वैभव प्रकाशन,** अमीनपारा चौक,
पुरानीबस्ती, रायपुर (छत्तीसगढ़) 492001
दूरभाष : 0771-4038958 मोबाइल : 094253-58748
(प्रबंध संपादक) 09826144434 (संपादक)
● ई-मेल : chhattisgarhmitra@gmail.com
● वेबसाइटस : www.chhattisgarhmitra.com
● फेसबुक : chhattisgarhmitra\facebook.com

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय भारत सरकार द्वारा चयनित ग्रंथालयों के लिए स्वीकृत पत्रिका

पं. माधवराव सप्रे साहित्य शोध केंद्र,
रायपुर (छत्तीसगढ़) का रचनात्मक सहयोग

Scanned with CamScanner

अमन कुमार

राम मनुज कस रे सठ बंगा

आज जिसे हम भगवान राम कहते हैं, क्या हम उन्हें जानते हैं? भारतीय समाज में राम का क्या महत्त्व है? क्या हम राम को सच में जानते हैं? तुलसीदास ने जिस राम को भगवान की पदवी दिलाई,वे कैसे अन्य कवियों के राम से अलग हैं। तुलसी के राम इतने महान क्यों हैं? क्यों वे आज घर-घर पूजे जाते हैं ?आइए जानते हैं तुलसीदास के राम को और तुलसीदास की कविता को जिसका जादू आज भारतीय जनमानस के सर चढ़कर बोल रहा है।

दद्दा गुरुदेव डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने बिल्कुल ठीक लिखा है कि 'मंगल और विवेक यह दो शब्द तुलसीदास के काव्य में सबसे अधिक आए हैं।' मंगल शब्द रामचरितमानस की शुरुआत से लेकर उसके अंतिम छंद तक में आया है, जैसे तुलसीदास जगत के मंगल के लिए ही राम काव्य की रचना कर रहे थे, उन्होंने लिखा भी है- 'मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की'। राम का वनवास भी जगत के मंगल के लिए ही करवाया गया है। अब आइये राम के मंगल कर्मों पर दृष्टि डालें।

तुलसीदास ने अपने राम का जन्म ही जग के मंगल के लिए करवाया है वे लिखते हैं कि - वे सत्य प्रतिज्ञ हैं और वेद की मर्यादा के रक्षक हैं। श्री रामजी का अवतार ही जगत के कल्याण के लिए हुआ है-

सत्यसंध पालक श्रुति सेतू। राम जनमु जग मंगल हेतू।।

डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने बिल्कुल ठीक लिखा है कि 'मंगल और विवेक यह दो शब्द तुलसीदास के काव्य में सबसे अधिक आए हैं।' मंगल शब्द रामचरितमानस की शुरुआत से लेकर उसके अंतिम छंद तक में आया है, जैसे तुलसीदास जगत के मंगल के लिए ही राम काव्य की रचना कर रहे थे, उन्होंने लिखा भी है- 'मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की' । राम का वनवास भी जगत के मंगल के लिए ही करवाया गया है। अब आइये राम के मंगल कर्मों पर दृष्टि डालें।

केवट प्रसंग :-

वाल्मीकि रामायण में निषादराज केवट के द्वारा रामादि को गंगा पार करा देते हैं। केवट द्वारा नाव के स्त्री होने का भय और राम के पैर धोने का आग्रह तुलसी का अपना है। इतना ही नहीं, सीता का 'मनि मुदरी' उतार कर उतराई देने का प्रयास और केवट का इन्कार करना भी वाल्मीकि में नहीं है। यह प्रसंग श्रीरामचरितमानस के मार्मिक प्रसंगों में से एक है। जब राम अयोध्या से वनवास के लिए निकले; तब केवट ने ही उन्हें गंगा पार करवाया था-अपने नाव में बैठा कर। परन्तु नाव में बैठाने से पूर्व केवट ने राम के चरण अपने हाथों से पखारने की शर्त रखी। इस पर राम को संकोच हुआ और वे दुविधा में पड़ गये। इस पर केवट ने बड़े तार्किक एवं मार्मिक ढंग से राम से निहोरा किया। केवट ने कहा- 'मेरे पास एक ही नाव है और इसी से अपने परिवार को पालता हूँ। आपके चरणों के चमत्कार को जानता हूँ । इन चरणों के स्पर्श से पाषाण भी सुन्दर नारी हो जाया करती हैं। अतः कृपया कर मुझे आपके चरणों को पखारने दीजिये। तभी नाव उस पार जायेगी -

मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना॥
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई॥
छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई॥
तरनिउ मुनि घरिनि होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई॥
एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू। नहिं जानउँ कछु अउर कबारू॥
जौ प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू॥'

सहायक प्रोफ़ेसर
किरोड़ीमल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

Scanned with CamScanner

RNI No. CHHHIN/2011/44763 ISSN 2278-392X

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं ...

पहल और परिणाम

औद्योगिक-आर्थिक विकास के नए आयाम

छत्तीसगढ़ में
अर्थव्यवस्था को मजबूती,
औद्योगिक उत्पादन तथा
व्यापार में वृद्धि,
भूमि तथा भवनों की रजिस्ट्री,
कृषि उपज तथा वनोपज उत्पादन,
वाहन खरीदी,
जीएसटी में वृद्धि

- औद्योगिक भूमि, अतिरिक्त भूमि को बेचने का अधिकार
- जमीन की गाइड लाइन दर में 30 प्रतिशत की कमी
- आवासीय फ्लैट की पंजीयन दर में कमी
- शासकीय विभागों द्वारा समस्त सामग्रियों की खरीदी में स्थानीय विक्रेताओं/वितरकों की अनिवार्यता
- बड़ी निर्माण परियोजना में उपयोग आने वाली समस्त सामग्रियों के क्रय हेतु विक्रेता का राज्य जीएसटी पंजीयन अनिवार्य
- क्रय शक्ति बढ़ने से व्यापार-उद्योग को बढ़ावा
- लघु वनोपजों के प्रसंस्करण हेतु इकाईयों की स्थापना
- 7 से बढ़ाकर 31 लघु वनोपजों की खरीदी समर्थन मूल्य पर
- राजीव गांधी किसान न्याय योजना से धान,गन्ना,मक्का किसानों को लाभ
- ऋण माफी से किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार
- जेम एवं ज्वेलरी पार्क हेतु भूमि आवंटित, स्थापना के कार्य में तेजी
- गुमास्ता लाइसेंस के वार्षिक नवीनीकरण से छूट
- औद्योगिक भूमि की दर में 30 प्रतिशत की कमी
- औद्योगिक भूमि का लीज रेन्ट 3 प्रतिशत से घटाकर 2 प्रतिशत
- औद्योगिक भूमि के स्थानांतरण शुल्क में 5 प्रतिशत की कमी

R.O. No. 1127/21

उदार नीतियां: सहयोगी प्रशासन

श्री भूपेश बघेल
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

सेवा-जतन सरोकार, छत्तीसगढ़ सरकार

स्वामी, मुद्रक-प्रकाशक सुधीर शर्मा द्वारा वैभव प्रकाशन, होटल इमराल्ड के पीछे, पी.एस. सिटी मार्ग, ढेला बाई सोनकर छात्रावास के आगे, गली नं.-5 श्याम चौक, चंगोराभाठा, रिंग रोड नं.-1, रायपुर (छ.ग.) पिन कोड 492013
संपादक : डॉ. सुशील त्रिवेदी, मकान नं क्यू-3, फेस-।।, श्रीरामनगर, शंकर नगर, रायपुर पिन कोड-492007.

Scanned with CamScanner